बहुमुखी रचनाकार गुलज़ार

राकेश कुमार, शोध छात्र, हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, आगरा रोड, जयपुर(राजस्थान)-भारत (Email :- Rakeshgalib@gmail.com)
अनुसंधान गाइड, **डॉ.पूनम लता मिड्ढा, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, आगरा रोड जयपुर** (रा**जस्थान)-भारत**

सारांश

मनुष्य सभी प्राणियों में से एक अलग और एक सभ्य प्राणी होने का स्थान रखता है । मनुष्य ने अपने मानसिक विकास और रचनात्मक कौशल से भाषाओं का निर्माण किया ,भाषाओं को सदृढ़ बनाने के लिए भाषा को व्याकरण के नियमो में बांध कर साहित्य जैसी बहुमूल्य विद्या का निर्माण किया जो इतिहास को जानने और मनुष्य के विभिन्न क्रियाकलापों, रचनात्मक विद्याओं को संरक्षित करने के लिए वरदान साबित हुआ । आज साहित्य मानव जात की अभिव्यक्ति है, आलोचना है और जीने के लि उत्तम मार्गदर्शक है । इस मानव समाज के विभिन्न घटनाक्रमों का जो प्रभाव हमारे दैनिक जीवन पर पड़ता है, साहित्य इस प्रकार के रचनात्मक विद्या की मार्मिक अभिव्यक्ति है । विभिन्न विद्याओं जैसे एकांकी, कविता, गीत, सवांद लेखन,गजल ,कहानी,गीत उपन्यास, , शायरी, यात्रा वृतांत, निबंध लेखन आदि साहित्यिक विद्याओं में लेखक अपने प्रतिभाशाली लेखिनी से जाने जाते हैं । पुरन्तु एक से अधिक साहित्यिक विधाओं में अपना लोहा मनवाने बाले लेखक गुलज़ार, जिन्हें बहुआयामी रचनात्मक कौशल हासिल हो बहुमुखी रचनाकारों की श्रेणी में शामिल करना या पहचाना जाना अतिश्योक्ति नही होगा ।

हर समुदाय ,हर उम्र के लिए हर वर्ग के लिये एक सामान पीड़ा महसूस करना गुलज़ार जैसे बहुमुखी रचनाकार के मौजूद होने का कुशल प्रमाण देता है । गुलज़ार साहब की भाषा और उनके मुहावरे भी साहित्य के हाशिये पर एक अस्पृश्य सा अस्तित्व बनाये हुए हैं । शिक्षित सम्पन्न और सम्भ्रान्त जनों को ये प्रायः अभद्र , अशालीन और यहाँ तक कि अश्लील भी लगते हैं पर फ़िल्मों में समाज के तलछट पर जी रहे इस वर्ग को पूरे विश्वसनीय ढंग से पेश करने के लिए न केवल इस वर्ग को इसकी पूरी बारीकियों के साथ जानना ज़रूरी है बल्कि इनकी बोलचाल की भाषा , गाली ,बोलियों और इनके ख़ास मुहावरों का ज्ञान भी आवश्यक है । गुलज़ार , एक कथाकार और कवि के रूप में अपने पैने पर्यवेक्षण क्षमता के चलते सर्वहारा वर्ग के लोगों की ज़िन्दगी , बोलचाल - व्यवहार आदि को अपनी रचनाओं में बेहद बारीकी से पेश करते हैं ।

गीतकार गुलज़ार वास्तव में भारतीय सिनेमा के युगपुरुष हैं , इतनी बहुमुखी कथाकार , पटकथा लेखक , निर्माता , निर्देशक एक साथ शायद ही किसी व्यक्ति में देखने को मिले ।

मूल शब्द: महरूम,बहुआयामी, त्रिवेणी, किरदार, पटकथा, वेशभूषा, मृदभाषी और मितभाषी, पंजाबी, उर्दू, रिफ्यूजी, बंटवारे, कैरियर आदि ।

प्रतावना - गुलजार बहुमुखी रूप से एक प्रतिभाशाली रचनाकार के रूप मे सामने आते है और गुलज़ार हर उम्र के लिये, हर मौसम के लिये, गुलज़ार साहब सबकी मार्मिक या काल्पनिक भावनाओं को अपनी कलम से किताबो में उतार देते है । गुलज़ार का सारा ,रचनात्मक दायरा गीत , शायरी,गजल,कविता , कहानी , तक ही नहीं सीमित नही रहा बल्कि गुलज़ार को त्रिवेणी छंद के जनक भी कहा जाता है ।

इसके अतिरिक्त लेखक गुलजार को काल्पनिक, मार्मिक,बाल साहित्य लेखक, रोमांटिक, भावुक, प्रगतिशील और पूर्व प्रेमी लेखक के रूप में भी जाना जाता है ।

गुलज़ार साहब हिंदी,उर्दू,पंजाबी भाषाओं के कवि है, इसके अलावा बंगला, मारवाड़ी, ,भोजपुरी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं में भी गुलज़ार ने बच्चों के लिये बाल साहित्य लिखा, इसके अतिरिक्त विभाजन का दर्द ,बेरोजगारी,एकता की भावना , आदि जीवन के विभिन्न पड़ावों और हर उम्र के लिए लिखा ।

गुलज़ार का ह्रदय हमेशा करुणा से द्रवित रहा इसी करुणा की सियाही से साहित्य निर्माण के लिये अपनी कलम चलाते रहे, गुलज़ार का सम्पूर्ण साहित्य चाहे गीत हो ,कविता हो ,कहानी हो, फ़िल्म निर्माण ,संवाद लेखन, सभी विधाओं में करुणा,रोचकता, सहजता दिखाई देती है ।

जीवन परिचय:

मेरा नाम सोचा न था, कि नहीं किसी ने
'अमा' कह के बुला लिया एक ने
'अजी' कह के बुलाया दूजे ने
अबे ओ' यार लोग कहते हैं।
जो भी यूँ जिस किसी के जी आया
उसने वैसे ही बस पुकार लिया
तुमने एक मोड़ पर अचानक जब
मुझको' गुलज़ार' कह कर दी आवाज़
एक सीपी से खुल गया मोती
मुझको एक मानी मिल गया जैसे
आह, ये नाम खूबसूरत है
फिर मुझे नाम से बुलाओ तो!!....(2)

गुलज़ार का विविध साहित्य पढ़ने सुनने को मिलता है।

लेखक गुलज़ार को बर्ष 2002 में उनकी कहानी "धुआँ" के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला इसके अलावा इन्हें तृतीय उच्चतम नागरिक सम्मान 'पद्मभूषण' से वर्ष 2004 में सम्मानित किया गया है। बर्ष 2009 में 'जय हो' गीत के लिये ऑस्कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साल 2008 में अकादमी पुरस्कार,2010 में ग्रेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिल्मों के लिये गुलज़ार को दादा साहिब फाल्के अवॉर्ड से भी समानित किये जा चुके है। (3)

मशहूर लेखक गुलज़ार 18 अगस्त 1934 को पाकिस्तान के दीना में जन्मे थे। वह पंजाबी सिख परिवार से रखते है उनकी माता का नाम सुजान कौर और पिता का नाम माखन सिंह कलरा था। भारत पाकिस्थान के बीच हुए बँटवारे के बाद गुलज़ार परिवार सहित दिल्ली में रहने लगे।

विभाजन के बाद उनके परिवार की आर्थिकी स्थिति बहुत दयनीय थी इसलिए गुलज़ार को लेखनी से गुलजार पहले दिल्ली में एक गैराज में मोटर मेकेनिक का काम किया करते थे। वह एक्सीडेंटल कारों की मुरमत किया करते है और कार पर रंग लगाने के साथ साथ समय मिलने पर वो उसी गैराज में कविता लिखने का कार्य भी शुरू किया कहते है। गुलज़ार रविंद्रनाथ टैगोर की कवितायों का अनुवाद किया करते थे इसी दौरान फ़िल्म निर्देशक बिमलरॉय से मिलने के बाद और साहित्य में अपना कैरियर बनाए के लिए सन 1960 में गुलज़ार मुंबई में आकर वहाँ बिमल रॉय के सहायक के रूप में काम करना शुरू कर दिया। बंदिनी फ़िल्म के लिए गुलज़ार ने अपने कैरियर के पहला गाना लिखा मोरा गोरा अंग लेइले ,मोहे शाम रंग देईदे, इसके बाद गुलज़ार असंख्य बॉलीवुड फिल्मों के लिए गाने लिखतें ही चले गए। [4]

गुलज़ार ने 70 के दशक में मशहूर अभिनेत्री राखी के साथ परिणय सूत्र में बंधे। राखी और गुलज़ार के घर एक बेटी का जन्म हुआ जिसका नाम मेघना रखा मेघना गुलज़ार ,मेघना गुलज़ार भी अपने पिता की भांति ही फ़िल्म निर्देशन का कार्य कर रही है।

पेहराव (वेशभूषा) – गुलजार जहां भी दिखाई दे , गुलज़ार का सफेद कुर्ता - पाजामा , लाल बेल्ट।वाली घड़ी ,और काले रंग के जूतों पर सफेद कुर्ता - पाजामा गुलजार का पेहराव है। गुलज़ार को सादा पहनावा और सफेद लिबास पसंद हैं।

गुलज़ार का बाल साहित्य

गुलज़ार कहते है, मैं आज भी बच्चा हूँ! मैं आज भी खेलना चाहता हूँ, कहते है बचपन मे गुलज़ार का मातृत्व वात्सलय छिन्न गया था। बचपन मे गुलज़ार को खिलौने की जगह मोटर गैराज में दुर्घटनाग्रस्त कारों को ठीक करने बाले औजारों से खेलना पड़ा। वहीं से गुलज़ार अपने बचपन की स्मृतियों को खोने -पाने के आँकलन

से ही गुलज़ार का ह्रदय एक बच्चे के ह्रदय में परिवर्तित हो गया जिससे उन्होंने बच्चों के लिए बाल साहित्य लिखा ।

बोस्कीयना में गुलज़ार लिखते है:

बाल साहित्य में बच्चों के लिए जितना काम गुलज़ार साहब का है , बड़े से बड़ा साहित्यकार भी उनसे प्रेरणा ले सकता है । गुलज़ार बच्चों के लिए गाना लिखते है ,जंगल -जंगल बात चली है ,चड्डी पहन के फूल खिला हैं । जब वह बच्चों के लिए लिखते हैं तो खुद भी एक बच्चे की तरह नजर आते हैं । (जंगल बुक सीरियल दूरदर्शन)
गुलज़ार द्वारा लिखी गयी 'बाल – साहित्य की पुस्तकें
1.बोसकी का पंचतंत्र ,2 .पोटली बाबा की कहानियां ,3.समय का खटोला ,4 राजा कपि 5.बेसुरा ढोड्ड 6.बोसकी के ताल–पाताल आदि ।

विभाजन की समस्या और गुलज़ार

हम सब भाग रहे थे रिफ्यूजी थे
माँ ने जितने ज़ेवर थे,
सब पहन लिये थे।
बाँध लिये थे....
छोटी मुझसे.... छह सालों की
दूध पिला के,ख़ूब खिलाके
साथ लिया था।
मैने अपनी एक "भमीरी"
और एक "लाटू"
पजामे मे उड़स लिया था।
रात की रात हम गाँव छोड़कर
भाग रहे थे,रिफ़्यूज़ी थे....
आग धुऐं और चीख पुकार के
जंगल से गुज़रे थे सारे
हम सब के सब घोर धुऐं
मे भाग रहे थे।

छोटी मेरे हाथ को पकड़कर दौड़ रही थी
एकाएक छोटी का हाथ मुझसे छूट गया और वो वहीं रह गयी
वहीं उस दिन फेंक आया था अपना बचपन । [5]

देश विभाजन भारत और पाकिस्तान दोनों देशों की पीड़ा उनकी मानसिक स्मृतियों मे अभी भी ज़िन्दा है इस दुर्भाग्यपूर्ण बंटवारे पर राजनीतिज्ञों , धर्म के विद्वानों , इतिहासकारों , बुद्धिजीवियों का अपना-अपना नजरिया है , गुलज़ार कहते है कि इस विभाजन पर , उन असंख्य बदनसीब लोगों का पक्ष जानने की कोशिश किसी ने नहीं की, जिन्होंने धार्मिक आधार पर दंगों में अपने प्रियजनों को खोया था ।

विभाजन पर एक जगह गुलज़ार कहते है :-

“ किस्से लम्बे ने लकीरां दे, गोली नाल गल कर दे बोल चुभदे ने वीरां दे”
“किस्से लम्बे ने लकीरां दे ,मिट्टी विच लोहू रल्या रांझे मर गये हीरां दे ! ” (6)
इसी आत्मीयता के भाव से गुलज़ार की कविता ' लकीरें ' की सहज ही याद आती है - लकीरें है , तो रहने दो किसी ने रूठ कर , गुस्से में शायद खींच दी थी, इन्हीं को अब बनाओ पालो और आओ कबड्डी खेलते हैं । (7)

गुलज़ार की सम्पूर्ण लेखनी में उनकी अपनी डायरी के पन्ने ,पन्ने न होकर उन लाखों बेघरों की हक़ीक़त हैं , जिन्होंने 1947 के विभाजन के चलते अपना घर संसार और दोस्तों के साथ - साथ अपना बाल जीवन भी खोया है । इसी बँटवारे के चलते उनकी कहानी' रावी पार ' के मुख्य पात्रों का सब कुछ लुट गया । बेघर हुए ऐसे लोग इतिहास मे केबल एक संख्या के रूप में ज़िन्दा है । उनका लुटना - पिटना , बँटवारे के दौर की अनेकों कहानियों में न केवल दर्ज़ है , बल्कि समय के साथ - साथ ऐसी रचनाएँ भी उस इतिहास का एक ज़रूरी हिस्सा बनती जा रही हैं । क्योंकि दोनों देशों के सरकारी इतिहास में नेहरू - जिन्ना - गाँधी जैसे लोगों का तो सविस्तार वर्णन है , पर अनगिनत दर्शन सिंह जैसों पीड़ितों का ज़िक्र नहीं है । (8)

गीतकार के रूप में गुलज़ार

सिनेमा के सौ बर्ष से भी अधिक इस यात्रा में गीत ,संगीत तब से उसके साथ है,जब वह मौन से मुखर हुआ । हिंदी सिनेमा के गीतों से पूरा भारतीय समाज न केबल मनोरंजन करता रहा बल्कि ये गीत उसके सुख दुख के साथी भी रहे हिंदी सिनेमा का साथ सत्तर के दशक अपने विषयो का चयन ,सामाजिक सरोकारों के कारण अगर सवर्ण युग कहलाता है तो उसमें साहित्यिक दर्जे के गीतों का भी कम योगदान नही है । सन 1963 की अपनी पहली फ़िल्म बंदिनी में मात्र एक गीत" मोरा गोरा अंग लेई ले मोहे शाम रंग देई दे "गुलज़ार ने अपनी शसक्त उपस्थिति दर्ज करवाई । गुलज़ार साहब आम तौर पर एक रोमांटिक गीतकार के रूप में देखने को मिलते है इसलिए ऐसे शब्दों का इस्तेमाल वहाँ दिखाई नही देता । लेकिन जहां नज्म में हालात की मांग हो वहां गुलज़ार ऐसे अल्फाज से हिचकिचाते नही है । गुलज़ार अपनी नज्मो में बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल पर भी जोर देते है ।

गुलज़ार द्वारा लिखे गए गीतों का दायरा बहुत दूर तक है , उनके गीतों से ये प्रतीत होता है कि गुलज़ार की कलम की पीड़ा किसी एक विशेष वर्ग के लिये नही बल्कि सबके लिए है ।

गुलज़ार की चाहत पूर्ण प्रेम की है , चाहे वह दो सजीव प्राणियों के बीच हो या प्रकृति और मन के बीच । इनके गीत आम आदमी के पीछे छूट गए सपनों को सामने ले आते हैं ।

जहाँ वे ' छोटी- छोटी बातों की हैं यादें बड़ी' (आनन्द) और' एक सौ सोलह चाँद की रातें एक तुम्हारे कांधे का तिल" (इजाजत) फ़िल्म के बेहतरीन गाने गुलज़ार ने लिखें ।(9)

एक फ़िल्म निर्देशन के रूप में गुलज़ार

अर्देशिर ईरानी द्वारा 1931 में निर्देशित फिल्म 'आलम आरा' के साथ भारतीय फिल्मो ने साइलेंट युग से निकल कर टॉकी में प्रवेश किया । इस महत्वपूर्ण उपलब्धि ने भारतीय फिल्म मनोरंजन को एक उद्योग के रूप में विकसत होने के लिए एक ठोस जमीन प्रदान की और सिनेमा को मनोरंजन के एक असरदार माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित किया । 1971 से 1980 तक बनी गुलज़ार की फिल्मों में सहज,सरल और स्वाभाविक अभिनय को महत्व दिया गुलज़ार ने अपनी पहली फ़िल्म 1971 'मेरे अपने' मे एक अभूतपूर्ण फ़िल्म निर्देशक के रूप में अपनी पहचान कायम की उसके बाद आई उनकी दूसरी फिल्म 1975' आंधी' में तत्कालीन समय की सच्चाई को बेहतर समझा जा सकता है । हिंदी सिनेमा के इस दौर में ,गुलज़ार शायद सबसे भिन्न निर्देशक थे । स्वयं एक स्वतंत्र साहित्यकार होने के चलते वह कथा बचाक या स्टोरी टेलिंग की बारीकियां बखुबी जानते थे । साथ मे कवि होने के लाभ उन्हें फिल्मों में एक सफल गीतकार होने के रूप में मिला ।

जिस गुलज़ार ने विभाजन के पश्चात भर आकर पेट भरने के लिए गैराज में काम किया हो, उस गुलज़ार की कलम से इतना भावपूर्ण सृजन सामने आया जिससे गुलज़ार को भारतीय सिनेमा के पितामाह बनने की स्तिथि में आ जाये,ये कोई मामूली बात नही है ।

इस सदन को इस तपस्या को,इस समर्पण को एक रवानी देने में ,एक मुकाम तक पहुंचाने में सलिल चौधरी, शंकर जयकिशन,एसडी बर्मन,हेमंत कुमार,खय्याम ,मदन मोहन,लक्ष्मकांत प्यारे लाल ,भूपेन हजारिका ,एआर रहमान,विशाल भारद्वाज का योगदान कम नही था,जिनसे गुलज़ार को प्रोत्साहन मिला ।(10)

हिंदुस्तान के सिनेमा प्रेमियों ,साहित्य प्रेमियों ने भी गुलज़ार का बहुत साथ दिया इस प्रकार गुलज़ार की कलम से शब्दों के सितारे कागज पर उतरते रहे और सिनेमा के सुनहरे पर्दे को जीवंत करते रहे

एक करुण कवि गुलज़ार

कविता वो करुणा है जो मजदूरन के श्रम को छाला और छाले की पीड़ा को निराला बना देती है । लेखक गुलज़ार भी हिंदी के सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की तरह करुण भाव मे अधिकांश अपनी रचनाएं लिखी । निराला के करुण ह्रदय का आलंबन उसकी पुत्री सरोज थी और तत्कालीन सामाजिक परिस्तिथियां । परन्तु गुलज़ार की करुणा का कारण भावुक ह्रदय का आलंबन था उसका पथरीला बचपन और तत्कालीन विभाजन की समस्या थी । गुलज़ार ने जीवन मे जहां ऊंचे- नीचे, पथरीले ,नीम रोशन सड़कों –गलियों से लेकर चकाचौंध भरे शहरों से गुजरने का मौका दिया , वहीं से उन्होंने उन निचली गहराईयों में जी रहे लोगों की बदहाल ज़िंदगी को न केवल करीब से देखा , बल्कि उन्हें अपनी कहानियों में रोशन किया, जिससे करुणा में महक सदा उनकी रचनाओं में साथ रही है ।

करुण भाव का उदाहरण गुलज़ार की रचनाओं में देखने को मिलता है , जिसमे एक आर्थिक स्थिति से ग्रस्त पात्र को कैसे अपनी इच्छाओं से महरूम होना पड़ता है :-

माँ ने जिस चाँद सी दुल्हन की दुआ दी थी मुझे
आज की रात वो फुटपाथ से देखा मैंने
रात भर रोटी नजर आया वो चाँद मुझे (11)

निष्कर्ष:-

लेखक गुलज़ार ने हर उस पीड़ित की,और जिंदगी की तमाम खुशियों से महरूम लोगों के क़रीब रहे हैं और बार - बार उनकी ज़िंदगी और उनके सामाजिक परिवेश को जब कभी भी अपने गीतों में सामने लाते रहे हैं । एक पूर्व प्रेमी लेखक के रूप में अपनी लेखनी को चलाते रहे चाहे वो शायरी हो या संवाद लेखन या फ़िल्म के लिए लिखा सवांद ,उनकी लेखनी में करुणा और विरह की झलक देखने को मिलती है ।

समाज का हर वर्ग चाहे वो समाज की आर्थिक सामाजिक बदहाली के शिकार होकर ,न केवल समाज की मुख्य धारा से कट कर हाशिये पर बस रहा है ,गुलज़ार ने उनकी पीड़ा को भी समझा और अपने साहित्य में उनको स्थान दिया । गुलज़ार वास्तव में भारतीय साहित्य और सिनेमा के युगपुरुष है इतनी बहुमुखी प्रतिभा शायद एक साथ किसी अन्य लेखक में देखने को मिले ।

आज गुलज़ार निरंतर अपनी प्रतिभा के अनुरूप कविता लेखन का काम कर रहे हैं । गुलज़ार के अलावा कोई भी व्यक्ति अपने परिश्रम और लगन से किसी एक क्षेत्र में खास मुकाम हासिल तो कर सकता है , लेकिन वही व्यक्ति साहित्य के अलग-अलग क्षेत्र में हाथ आजमाये और उसमें भी अपना खास मुकाम बनाता चले । यह गुलज़ार ही कर सकते हैं । उनके काम का दायरा अत्यंत ही विविध है । बावजूद इसके वह बिना थके और बिना खुद को दोहराए अपने सृजन के काम में अनवरत रूप से संलग्न हैं । इतने बृहद दायरे के साथ सृजन का वैविध्यपूर्ण कार्य तभी संभव हो सकता है , जब कोई सम्पूर्ण सिंह कालरा गुलज़ार में तब्दील हो जाए । लेकिन यह तब्दीली इतनी आसान नहीं है और ना ही आसान है किसी और का सम्पूर्ण सिंह कालरा से गुलज़ार साहब बन जाना, जो अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण साहित्यिक आकाश में तारे की भांति चमक रहे है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1-जीरो लाइन पर गुलज़ार :अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 16 ।
2 बोस्कीयना :यशवंत व्यास पृष्ठ संख्या 15 ।
3 शब्दों से परे:डॉ.सोना सिंह पृष्ठ संख्या 65 ।
4 जीरो लाइन पर गुलज़ार:अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 15
5 अबाज में लिपटी खामोशी :गुलशेर भट्ट पृष्ठ संख्या 48 ।
6.ज़ीरो लाइन पर गुलज़ार :अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 20 ।
7.ज़ीरो लाइन पर गुलज़ार:अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 22 ।
8.जीरो लाइन पर गुलज़ार:अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 20 ।
9.शब्दों से परे :डॉ.सोना सिंह पृष्ठ संख्या 101 ।
10.जीरो लाइन पर गुलज़ार :अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 100 ।
11.त्रिवेणी:गुलज़ार पृष्ठ संख्या 11 ।